।। ओ३म् ।।

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष - 94 अंक 10 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 5/- 21 फरवरी से 5 मार्च 2020

वैचारिक क्रान्ति के जनक, स्वराज्य के उद्घोषक, क्रान्तिकारी सन्त, निर्भीक सन्यासी

महर्षि दयानन्द सरस्वती

की जयन्ती एवं बोधोत्सव पर भावपूर्ण स्मरण

प्रतिनिधि गतिविधि

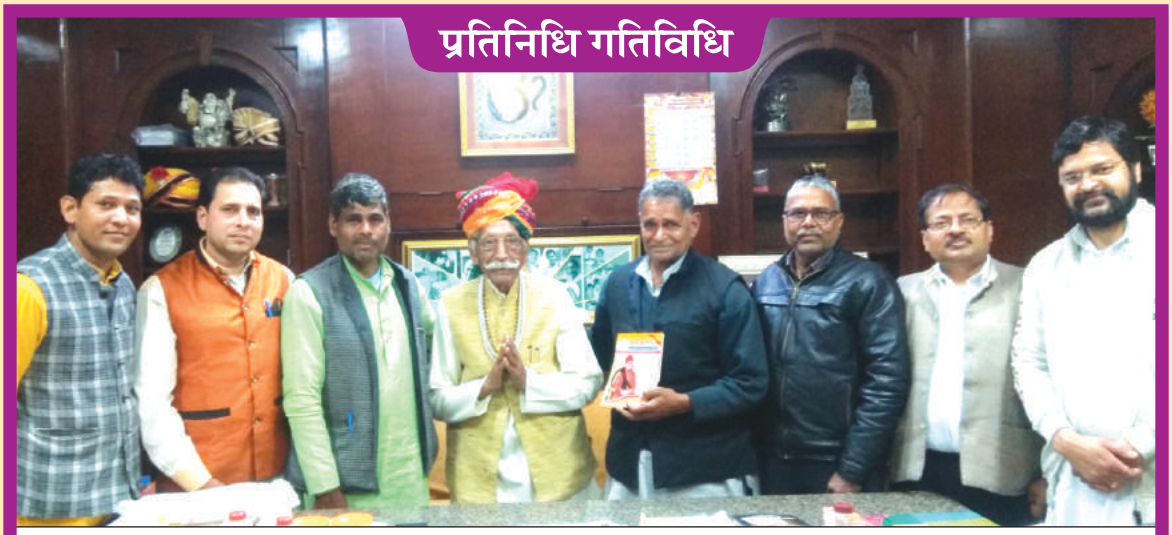

आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों की पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं विनय आर्य जी के साथ भेंट

सभा उपप्रधान जगदीश प्रसाद आर्य द्वारा महाशय जी का सम्मान

सभा के पदाधिकारी कुशलगढ़, बांसवाड़ा में

डॉ. विश्वास पारीक द्वारा अजमेर पुलिस अधिक्षक श्री कुंवर राष्ट्रदीप जी एवं जिला कलेक्टर श्री विश्वमोहन जी शर्मा को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्यप्रतिनिधिसभाकामुखपत्र

त्रयोदशी कृष्णपक्ष फाल्गुन सम्वत् 2076, कलि सम्वत् 5120, दयानन्दाब्द 195, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,120

संरक्षक

1. महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.)
2. श्री रमेश गुप्ता (आर्य), अमेरिका
3. श्री दीनदयाल जी गुप्त (डॉलर बनियान)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
2. श्री विजय सिंह भाटी
3. श्री जगदीश प्रसाद आर्य
4. श्री मदनमोहन आर्य

प्रधान संपादक

श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री

प्रंबन्ध सम्पादक

1. आचार्य रविशंकर आर्य
2. डॉ. सन्दीपन आर्य
3. श्री अशोक शर्मा
4. श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति

आर्य मार्तण्ड वार्षिक शुल्क – ₹ 100/-
त्रैमासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 3100/-
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 5100/-
वार्षिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 11000/-

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हनुमान ढाबे के पास, राजापार्क, जयपुर –302004

0141-2621879, 9352547258

e-mail : aryamartand@gmail.com

e-mail : arya.sabha1896@gmail.com

आर. एन. आई नं.10471/60

अनुक्रम

- ईश्वरीय बोध – सम्पादकीय 04
- सहयोग एवं अपेक्षा – सभा कार्यालय 05
- ''कठोपनिषद्'' – आचार्य सत्येन्द्र आर्य 06
- हमारी ज्ञानेन्दियाँ – दिलीप अधिकारी 08
- आर्य कन्या गुरुकुल भुसावर– आचार्या 09
- प्रतिनिधि गतिविधि – दीपक शास्त्री 10
- आर्यवीर दल सशक्तिकरण – गगेन्द्र आर्य 11
- विभिन्न – सभा कार्यालय 12
- महर्षि दयानन्द जयन्ती – अवनीश मैत्री 13
- अन्य समाचार – 14

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी। स्वत्वाधिकारी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर की ओर से प्रकाशित, मुद्रक श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री द्वारा वी. के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से मुद्रित ।

ईश्वरीय बोध

सम्पादकीय....

विवेक प्राप्ति के अनेक उपाय शास्त्रों में निर्दिष्ट हैं। वेद के माध्यम से परमेश्वर मनुष्यों को उपदेश करते हुए कहते हैं **''पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति''** अथर्ववेद 10.8.22 हे मनुष्यों! उस परमेश्वर के काव्य को देखो जो न कभी नष्ट होता है और न ही पुराना होता है। भगवान् को समझने के दो प्रकार के काव्य हैं एक दृश्य काव्य अर्थात् ये जगत् एवं दूसरा श्रव्य काव्य अर्थात् वेद। इस ब्रह्माण्ड में स्थित पदार्थ सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र, वनस्पति, पेड़–पौधे, नदियाँ, पर्वत इत्यादि एवं इन पदार्थों में कार्यरत नियमों को देखकर इनके नियामक रचयिता का अनुमान होता है कि कोई चेतन सत्ता है जो इस ब्रह्माण्ड को बना व चला रही है और वो ऐसी अनन्त शक्तियों से युक्त है कि एक समय आने पर इस संसार को अपने कारण में लय कर देता है नष्ट कर देता है वही सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है। इसके भिन्न, प्रमाण एवं तर्क से रहित परमेश्वर को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

मनुष्य के जीवन में जन्म से मृत्यु पर्यन्त अनेक घटनाएँ घटित होती हैं जो कि शाश्वत नियम की ओर संकेत करती हैं लेकिन अज्ञान के आवरण से युक्त हुए हम मनुष्यों को ऐसी घटनाएं सामान्य प्रतीत होती हैं लेकिन किन्हीं दिव्यात्माओं के लिए का ऐसी घटनाएँ जीवन परिवर्तित करने वाली होती हैं। ऐसी ही कुछ घटनाएँ बालक मूलशंकर के जीवन में घटीं। शिवलिंग पर चूहों का कूदना, मल–मूत्र करना कोई विशेष बात नहीं है लेकिन इसी घटना पर मूलशंकर सोचता है– मैंने तो सुना है कि शिव शत्रुओं का नाश करता है बड़ा शक्तिवाला है लेकिन ये कैसा शिव है कि जो चूहों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो हमारी रक्षा कैसे करेगा? नहीं! नहीं!! ये शिव नहीं हो सकता, सच्चा शिव तो कोई और है। इसी प्रकार अपने बहिन एवं चाचा की मृत्यु पर जन्म–मृत्यु से सम्बन्धित विचार उपस्थित करता है कि मैं भी इसी प्रकार मृत्यु को प्राप्त होऊंगा, मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? कहाँ जाऊँगा इत्यादि। इन्ही विचारों की तीव्रता एवं उभरती हुई तीव्र जिज्ञासा ने एक ऐसे महामानव को जन्म दिया जो स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। स्वामी दयानन्द ने अपनी युवावस्था में जो लक्ष्य निर्धारित किया उस लक्ष्य से कभी भी विचलित नहीं हुए। अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए किसी भी चुनौती को स्वीकार करने को तैयार थे। अनेक बाधाओं पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त करते हुए उन्होंने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। आखिर इस संसार में एसा कौन है जिसने मृत्यु होते न देखी हो और ऐसी घटनाओं को देखकर जीवन में कभी कुछ पल के लिए भी विवेक उत्पन्न न हुआ हो। किन्तु उस विवेक को लगातार बनाए रखना और बढ़ाते रहना पूर्व जन्मों के कर्मफलानुसार एवं वर्तमान जन्म के पुरुषार्थ पर निर्भर है।

योग शास्त्र में कर्मफल की चर्चा करते हुए योगिराज भगवन् पतंजलि लिखते हैं –

''ततस्तद्विपाकानुगुणानामेवाभिव्यक्तिर्वासनानाम्''

योग–४.८

कर्मफल के अनुरूप वासनाओं की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् कर्मों का फल जिस शरीर के रूप में प्राप्त हुआ है उसके अनुरूप ही संस्कार प्रकट होते हैं जैसे मनुष्य योनि में मनुष्य के संस्कार प्रकट होते हैं तथा अन्य योनि के संस्कार दबे रहते हैं, प्रकट नहीं होते हैं। पशु योनि में पशु के संस्कार, पक्षियों की योनि में पक्षियों के संस्कार ठीक इसी प्रकार देव योनि में देवों के संस्कार एवं ऋषि योनि में ऋषि योनि के संस्कार प्राप्त होते हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि योनि तो मनुष्य की हो और संस्कार ऋषियों के उद्भुत् हो जावें इसके विपरीत ऋषि योनि प्राप्त होने पर मनुष्य योनि के संस्कार नहीं आ सकते एवं जिस प्रकार के संस्कार उभरते हैं उसी के अनुरूप स्मृतियाँ उभरती हैं। पूर्व जन्मों के फलस्वरूप मूलशंकर को ऋषि योनि प्राप्त हुई थी। ऋषि जन्म के अनुरूप ही संस्कार उत्पन्न हुए एवं दिव्य संस्कारों के अनुरूप ही

वृत्तियाँ उत्पन्न हुईं और न दब सकने वाला विवेक ज्ञान उत्पन्न हुआ। ऋषि दयानन्द को जो बोध हुआ वह तो विलक्षण है एतिहासिक है और इस बोध दिवस पर ऋषि जीवन का विशेष स्मरण करते हैं। ऋषि जीवन को स्मरण करते हुए प्रायः हम विचारते हैं कि यह बोध दिवस हमारे लिए भी एक आत्मचिन्तन का विषय हो कि मेरा जीवन किस दिशा में चल रहा है। ऋषि तो सच्चे ईश्वर भक्त थे, क्या मैं भी ईश्वर भक्ति का कुछ प्रयास करता हूँ? स्वामी जी ने सम्पूर्ण जीवन परोपकार हेतु लगाया, क्या मैं एक सप्ताह में भी कुछ घण्टे निकालता हूँ? पुस्तकों की धूल साफ करके क्या एक पृष्ठ का भी स्वाध्याय करता हूँ आलस्य त्यागकर स्वास्थ्य वृद्धि हेतु व्यायाम करता हूँ। क्या स्वं द्वारा अर्जित सामर्थ्य में से कुछ अंश धर्मार्थ व्यय करता हूँ? इत्यादि अनेक प्रश्न हम अपने मन में उपस्थित करके अवलोकन कर सकते हैं और बहुत अधिक ना सही किन्तु थोड़ा सा सुधार करने के लिए थोड़ा सा बोध तो कर ही सकते हैं।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।
किन्नु मे पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरुषैरिति।।

(शारग्धर संहिता)

अर्थात् मनुष्य को चाहिए कि वह प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करके पता लगावे कि मेरा जीवन पशुओं के समान केवल खाने–पीने में ही व्यतीत हो रहा है या सत्पुरुषों के समान उत्तम–उत्तम कार्यों में लग रहा है।

–आचार्य रवि शंकर आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा राजथान का उभरता स्वरुप एवं सहयोग–अपेक्षा

राजस्थान में स्थित आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ऋषि कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु कृत संकल्पित है। पिछले कुछ समय से सभा द्वारा कई प्रकल्प गति से चलाए जा रहे हैं। आज सभा में वेद प्रचार हेतु वैदिक विद्वान् उपलब्ध हैं जो गाँव–गाँव, नगर–नगर जाकर ऋषियों का सन्देश सुनाते हैं अभी हाल ही में सभा ने एक वैदिक भजनोपदेशक की व्यवस्था की है। सभा की पत्रिका आर्य मार्तण्ड के स्वरुप में आमूल परिवर्तन करके उसे प्रतिष्ठित स्वरूप देने का प्रयास चल ही रहा है। सभा अधिकारियों एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं द्वारा राजस्थान के आर्य समाजों में जाकर सम्बन्धित समस्याओं को सुनकर निराकरण कर समाजों को गति प्रदान करने की सूचनाएँ विगत एक वर्ष से आर्य मार्तण्ड में आप पढ़ ही रहे हैं। सभा कार्यालय के नवीनीकरण के साथ आर्य समाज एवं आर्यवीर दल के कार्यकर्ताओं, विद्वानों एवं अतिथियों के भोजन आवास की व्यवस्था को भी पूर्व की अपेक्षा अच्छा किया है जिसे आगन्तुक अतिथि स्वयं अनुभव करते हैं। निश्चित् रूप से ये सब कार्य आर्य समाजों एवं आर्य भामाशाह महानुभावों के सहयोग से ही हो पा रहे हैं। पुनरपि विविध कार्यों के गति से संचालित होने से आपसे सहयोग की अपेक्षा है। अतः राजस्थान की सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि सभी आर्यसमाजें अपनी आय का दशांश देने में उत्साह दिखाएँ एवं आर्य भामाशाह इस पुनीत कार्य हेतु आगे आएँ जिससे संगठन निर्माण कार्य निर्बाध आगे बढ़ सके। सभा अधिकारियों ने विचार किया है कि यदि कोई सभा के प्रकल्पों यथा वेद प्रचार, पत्रिका प्रकाशन, आतिथ्य आहुति में आर्थिक सहयोग करेंगे, आर्य मार्तण्ड पत्रिका में उन आर्य महानुभावों का नाम प्रकाशित किया जायेगा।

ऋषि बोध के अवसर पर सभा के सभी अधिकारी एवं कार्यकर्ता मनन करेंगे कि ऋषि मिशन को और अधिक कैसे बढ़ाकर सफल किया जा सकता है।

आप सब के स्नेह एवं सहयोग का कांक्षी।

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

उपनिषद् गंगा....

ओम् विश्वानि देव सवितदुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।। यजु0 ३०.३

हे सकल ब्रह्माण्ड के उत्पादक दिव्य गुण–कर्म –स्वभाव के धारण कर्ता हमारी आत्मा या मन में जो दुष्ट दुर्गुण कुवासनाएँ हैं उन सब दुष्ट दुर्व्यसनों बुराईयों को दूर कर दीजिए और जो हमारा और जगत् का कल्याण करने वाले सद्गुण हैं उन्हें हमारे हृदय में धारण कराइये। इन गुणों से सांसारिक और मोक्ष सुख दोनो को प्राप्त करें ऐसा अनुग्रह कीजिए।

ओम् उशन्हवै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ।
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस।। १।।

वाजश्रवस ऋषि ने सर्वदुःख निवारक मुक्ति की इच्छा करते हुए सम्पूर्ण धन सम्पत्ति सर्वमेध यज्ञ में आमन्त्रित ब्राह्मणों को दान में दे दी। उस वाजश्रवस ऋषि का निश्चय से नचिकेता नाम वाला सूक्ष्म मेधा सम्पन्न पुत्र था।

व्याख्या :– प्रत्येक युग के मनुष्य के अन्दर विवेकपूर्ण विचार उठता है इस विचार ने आदमी का कभी पीछा नहीं छोड़ा जिसमें सुख की आकांक्षा, स्वर्ग की आकांक्षा पहली शर्त है इसलिए सुख की खोज में सदा ही मनुष्य प्रयत्नशील है और इस सुख की खोज को वैसे ही खोजता फिर रहा है जैसे प्यासा आदमी बैचेनी से पानी को खोजता फिरता है। जिस स्थिति में मनुष्य है वह उससे सन्तुष्ट नही है वह उसे नकार देना चाहता है नकारात्मक स्वीकृति है, सकारात्मक स्वीकृति सुख की हो सकती है, दुःख की नही। कोई आदमी अपने को दुःख में नहीं देखना चाहता किन्तु सुख हर आदमी, हर प्राणी पाना चाहता है सुख के स्रोत हमारे अन्दर है और साथ ही दुःख के स्रोत भी अन्दर ही हैं अर्थात् जीवात्मा शरीर के अन्दर रहता हुआ विभिन्न निमित्तों से सुख दुःख प्राप्त करता रहता है। किन्तु अकेला जीवात्मा सुख–दुःख का अनुभव नहीं कर सकता, मन और इन्द्रियों की सहायता से जो जीव सुख–दुःख का अनुभव करता है, जो चेतन है, जिसके शरीर में निवास होने के कारण शरीरादि इन्द्रियाँ भी चेतनवत् प्रतिभाषित होती हैं। शरीर जड़ है वह चेतनवत् तो हो सकता है पर चेतन नहीं। इसलिए जिस शरीर से जीवात्मा निकल गया वह शरीर अब कोई क्रिया नही कर सकता क्योंकि जिस सक्रिय चेतना के कारण शरीर चलता–फिरता, खाता–पीता आदि क्रियाओं वाला दिख रहा था। शरीर से उसके निकल जाने के कारण वह निष्क्रिय हो गया वह जैसा था वैसा हो गया। जड़ था जड़ दिखने लग गया, अब उस जड़ शरीर की चाहे कुछ भी गति क्यों न करें वह कोई विद्रोह या प्रतिक्रिया न करेगा आप उसे गाली दें मारें, पीटें, जलायें, फेंकें, गाड़ें चाहे कुछ भी करें उस पर कोई फर्क न पड़ेगा। वाजश्रवस के आत्मा की उत्कण्ठा है। अपने आप को इसी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाने की। सांसारिक बन्धनों से पूर्णतया मुक्त हो जाने के बाद ही चाहे वह बन्धन किसी प्रकार का हो यदि संसार का सम्बन्ध उससे घनिष्टता से जुड़ा हुआ है तो वह बन्धन ही है आत्मा को मुक्त करने की बात सोची जा सकती है इसलिए वाजश्रवस ऋषि कुछ भी अपने पास न रखने की इच्छा से जो कुछ भी उनके पास था वह सब कुछ ब्राह्मणों को दान दे रहे थे वे पूरी तरह अन्तरात्मा को बन्धनों से छुड़ाना चाहते थे। बड़ी विशेष चाह रही होगी मुक्ति की उन्हे ज्ञान हो गया अपनी दासता की पीड़ा का परवशता दासता से कभी सुख नहीं मिलता यह तो एक ऐसी जन्जीर है जो हमारे विकास की सम्पूर्ण शक्तियों को चाट जाती है नचिकेता का ऐसे ही मुमुक्षु पिता का पुत्र होने का सौभाग्य प्राप्त था बालक साधारण ज्ञान सम्पन्न न था किन्तु अद्भुद ज्ञान का धनी था वह पुत्र ऐसा पुत्र न था जो अपने पिता को नरक में डाल दे। आयु में नव युवा किन्तु ज्ञान वृद्ध था कर्तव्य अकर्तव्य को जानने वाला था।

– आचार्य सत्येन्द्र जी आर्य
वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़

हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ

इस मनोंहर सृष्टि में प्रभु ने हमारी आत्मा के लिए शरीर की रचना की है आत्मा के लिए यह शरीर प्रभु का एक अनुपम वरदान है। इसमें रहकर हमारी आत्मा इच्छा व प्रयत्नामक शक्ति से इसका संचालन करती हुई विविध भोगों को भोगती है। ज्ञान ही आत्मा का भोग है आत्मा ज्ञान स्वरुप है। ज्ञान के आधार पर ही आत्मा की इच्छा होती है। इच्छा के अनुरुप प्रयत्न होता है। आत्मा की इच्छा व प्रयत्न से शरीर में चेष्टाएँ उत्पन्न होती है। प्रत्येक कर्म के मूल में ज्ञान ही होता है। ऐसे में ज्ञान का ठीक होना अत्यन्त आवश्यक है। ज्ञान के बिगड़ने से कर्म भी बिगड़ जाता है। विशुद्ध ज्ञान ही पवित्र कर्मों का जनक है।

प्रभु ने आत्मा को बाह्य विषयों के ज्ञान के लिए ज्ञानेन्द्रयाँ प्रदान की हैं। उनसे ही आत्मा बाहर की वस्तुओं को जानती है। ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं। इनके नाम क्रमशः चक्षुः, श्रोत्र, रसना, घ्राण और त्वचा हैं। चक्षु का कार्य रसास्वादन करना। घ्राण का कार्य सूँघना और त्वचा का कार्य छूना है। ये सब अपना अपना कार्य करती हैं। इनके कार्य में अदला बदली परिवर्तन नहीं होता है। इनके ये नियत निर्धारित कार्य हैं। इसी प्रकार इनके विषय भी भिन्न भिन्न व नियत हैं। चक्षु का विषय रूप है, चक्षुरूप को देखती है। श्रोत का विषय शब्द है, श्रोत्र शब्द को सुनता है। रसना का विषय रस हैं रसना रस को जानती है। घ्राण का विषय गन्ध है, घ्राण गन्ध को सूँघती है और त्वचा का विषय स्पर्श है त्वचा स्पर्श को जनाती है। इस प्रकार प्रभु ने इन्द्रियों की रचना करके उनके कार्य और विषय दोनों ही नियत किए हैं।

यह संसार प्रभु ने आत्मा के भोग और अपवर्ग के लिए बनाया है। भोग का अर्थ ज्ञान ही है। आत्मा रूप रस आदि विषयों का भोक्ता है। इस वाक्य को अर्थ रूप रस आदि विषयों को जानना ही होता है। हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है कि हमें मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है। जिससे ज्ञान प्राप्ति के पूरे पाँचों साधन उपलब्ध हैं। ये साधन कितने अद्‌भुत हैं। यदि हम इनका समुचित प्रयोग करें और इनकी शुद्धि, रखरखाव व सुरक्षा का ध्यान अच्छे से रखें तो इनमें लम्बे समय विकार नहीं आते हैं। इनके सुरक्षा के साधन और तदनुकूल ज्ञान भी प्रभु ने हमें प्रदान किया है। इनके दूषित वा रुग्ण होने से ज्ञान ठीक से नहीं होता है। अतः पदार्थों के यथार्थ ज्ञान के लिए इन साधनों का ज्ञानेन्द्रियों का रोग रहित, स्वस्थ, बलवान् होना अत्यन्त आवश्यक है। हमको ज्ञान प्राप्ति की सब अनुकुलताएँ प्रभु ने प्रदान की हैं। हमें इन ज्ञानेन्द्रियों का समुचित प्रयोग करते हुए संसार से ज्ञान प्राप्त करना है। अपने ज्ञान को उत्तरोत्तर निर्मल स्वच्छ पवित्र करते चलना है। आत्मा इन्द्रियों का स्वामी है। आत्मा के अधीन ये इन्द्रियाँ हैं। जब तक आत्मा इन्हें अपने अधीन रखकर इनसे यथोचित् कार्य लेता रहता है, तब तक ये आत्मा के योग और अपवर्ग को सिद्ध करती जाती हैं। इससे आत्मा की उन्नति होती रहती है। आत्मा की लक्ष्य से दूरी दिनों दिन घटती चली जाती है। परन्तु जब आत्मा प्रमाद व अनवधानता आदि दोषों से संयुक्त होकर इन पर अपना शासन ठीक से नहीं चला पाता है, तब ये इन्दियाँ स्वच्छन्द होकर अनपेक्षित भोग प्रदान करती हैं। जिससे अन्तःकरण अपवित्र अस्वच्छ हो जाता है। आत्मा की अपवर्गरूपी लक्ष्य से दूरी बढ़ जाती है। आत्मा का हित इसी में है कि वह ऋषियों के बताए हुए प्रत्याहार आदि साधनों के प्रयोग से इन्द्रियों पर अपना स्वामित्व बनाए रखें और इनसे अपने अन्दर यथार्थ ज्ञान को संचित करता जाए। इन्द्रिय जन्य ज्ञान से ही प्रायः हमारे जीवन में बहुत सारे व्यवहार चलते हैं। ऐसे में हमें अपने इन्दियों की आँख, कान, नाक जिह्वा और त्वचा की सावधानी से रक्षा करनी चाहिए। प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय अपने आपमें अद्‌भुत व अलौकिक है। वह ईश्वर का अनुपम वरदान है। उनकी सुरक्षा व सामर्थ्य की वृद्धि के लिए हमें निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए। इत्योऽम् शम्।

दिलीप अधिकारी
शिवालिक आर्ष गुरुकुल, अम्बाला, हरियाणा

आर्य कन्या गुरुकुल भुसावर में प्रवेश प्रारम्भ

उत्तम शिक्षा, सुसंस्कार, उत्तम स्वास्थ्य तथा सर्वांगीण विकास के लिए आप अपनी बेटी का आर्ष कन्या गुरुकुल भुसावर में प्रवेश करायें। गुरुकुल नगर के मध्य शान्त वातावरण में स्थित है। भोजन, आवास एवं शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है। गुरुकुल राज. मा. शिक्षा बोर्ड तथा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। आर्ष पाठविधि तथा सभी आधुनिक विषयों की बोर्ड से परीक्षा होती है। कक्षा 6,7 तथा 8 में प्रवेश होगा। प्रतिभाशाली निर्धन तथा निराश्रित छात्राओं के लिए छात्रवृति उपलब्ध है।

प्रवेश परीक्षा तिथि :– 20 अप्रैल 2020

प्रवेश की इच्छुक प्रार्थी प्रवेश तिथि पर उपस्थित होकर परीक्षा में भाग लें और अपना प्रवेश सुनिश्चित कर लें।

भजनोपदेशिका बनने का सुअवसर

प्रवेश प्रारम्भ

आर्ष कन्या गुरुकुल भुसावर में उपदेशिका, भजनोपदेशिका गुरुकुल चलता है। हारमोनियम, तबला, ढोलक, बांसुरी, गिटार, झांझ, मंजीरा, ड्रम, साइड ड्रम आदि वाद्ययन्त्रों की उत्तम व्यवस्था है। वैदिक कर्मकाण्ड, उपदेशिका तथा भजनोपदेशिका बनने का विधिवत् प्रशिक्षण दिया जाता है। कन्या गुरुकुल की विदूषियाँ देश में सर्वत्र वेदपाठ, भजनोपदेश के लिए आर्य समाजों के उत्सव आदि में आमन्त्रित की जाती है। आप भी अपनी समाज, संस्था तथा पारिवारिक कार्यक्रमों में वेदपाठ तथा भजनोपदेश के लिए आमन्त्रित करके लाभ उठायें। भजनोपदेशिका तथा वैदिक कर्मकाण्ड का विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए इच्छुक बेटियों अथवा महिलाओं गुरुकुल में शीघ्र प्रवेश प्राप्त करें। नया सत्र प्रारम्भ हो रहा है। **सम्पर्क सूत्र – 8441087408, 9694892735**

बेटी गुरुकुल में पढ़ेगी आर्य समाज आगे बढ़ेगा।

आर्ष कन्या गुरुकुल भुसावर निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। यह सब आपके सहयोग से ही सम्भव हुआ है। कन्या गुरुकुल जैसी, धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना और संचालन करना कहीं भी सरल नहीं होता है। मरूभूमि राजस्थान में बड़े नगरों से सुदूर भुसावर जैसे छोटे से स्थान पर गुरुकुल का संचालन करना अत्यधिक कठिन कार्य है, परन्तु जब उद्देश महान हो, धैर्य परिश्रम और त्याग की यज्ञिय भावना हो तो कठिन कार्य भी समाज के सामने सरल हो जाता है। इस यज्ञ को करने का दृढ़ संकल्प 9 वर्ष पूर्व पिता तुल्य, पूज्य गुरुवर श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री ने लिया और कन्या गुरुकुल की स्थापना हो गई। आर्य समाज भुसावर, हिण्डौन, बयाना, भरतपुर, दौसा, जोधपुर आदि के सभी अधिकारियों पुरुष एवं महिला सदस्यों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर तन, मन तथा धन से सहयोग किया। आप सभी का सहयोग और आशीर्वाद मिला। आपके दान की पवित्र आहुतियों से यज्ञ की ज्योति निरन्तर प्रज्वलित है गुरुकुल की आचार्या प्रियंका दीदी का सानिध्य हमें निरन्तर प्राप्त हो रहा है। 14 बहनों से गुरुकुल प्रारम्भ हुआ और 60 बहनें अपने जीवन का निर्माण कर रहीं हैं। अनेक ब्रह्मचारिणियों, उपदेशिका, भजनोपदेशिका, योग शिक्षिका तथा आर्य वीरांगना दल की शिक्षिका बनकर देशभर में वेद का प्रचार–प्रसार कर रहीं हैं। आप और हम सबको भी ऋषि का ऋण उतारने का अवसर प्राप्त हो रहा है। यह ऋषि प्रणीत वैदिक धर्म का कार्य है। एक कन्या के वेद की विदूषी बनने से अनेक परिवारों में सुसंस्कार पैदा होंगे। अब हम सभी का दायित्व है कि यह नव अंकुरित पौधा वृक्ष बनने जा रहा है। इस वर्ष तीन बहनें आर्ष पाठविधि से शास्त्री उत्तीर्ण करके स्नातिका बन जाएगीं। विद्या का दान सर्वोत्तम दान है। आप से विनम्र निवेदन है कि यह कन्या गुरुकुल आपका है। हम आपकी बेटियाँ हैं। गुरुकुल की अनेक बहनों ने आर्य समाज का कार्य करने का संकल्प लिया है। गुरुकुलों की आर्य समाज को अत्यन्त आवश्यकता है। आप भावनात्मकरूप में गुरुकुल से सम्बन्ध स्थापित करें, अपनी बेटियों को गुरुकुल में पढ़ायें और तन–मन–धन से सहयोग, सुझाव और आशीर्वाद प्रदान करें।

ब्र.श्रुतिआर्या **ब्र. गौरवी**

निमन्त्रण–पत्र

आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। आर्ष कन्या गुरुकुल भुसावर का वार्षिकोत्सव 28 एवं 29 मार्च शनिवार–रविवार 2020 को आयोजित किया जा रहा है। उत्सव में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् सन्यासी, स्वामी विजयानन्द सरस्वती मेरठ, स्वामी गणेशानन्द सरस्वती (पूर्व चेयरमैन गोरक्षा आयोग म.प्र.), आर्य नेता ठा. विक्रमसिंह (दिल्ली), आचार्य शिवकुमार शास्त्री (कोलायत), डॉ. जितेन्द्र आर्य (प्रो. रा. कॉलेज बयाना), आचार्य घनश्याम (मुरेना) आदि विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है। कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा शास्त्रीय संगीत आर्ष विद्या, लाठी, तलवार, जूडो–कराटे तथा व्यायाम शिक्षम भागचन्द्र आर्य के निर्देशन में भव्य व्यायाम प्रदार्शन होगा। इस अवसर पर आर्य जगत् के राजस्थान प्रदेश तथा राट्रीय स्तर के आर्य नेताओं को भी आमन्त्रित किया गया है। आप सादर आमन्त्रित है। कृपया पधार कर गुरुकुल का अवलोकर करें एवं धर्म लाभ उठायें। पधारने की सूचना पूर्व देने की कृपा करें। धन्यवाद

सम्पर्क सूत्र – 8441087408, 9694892735

व्यवसाय आधारित विशेष प्रशिक्षण (निःशुल्क)

शास्त्रीय संगीत विद्यालय– कन्या गुरुकुल भुसावर में ठाकुर विक्रम सिंह जी की प्रेरणा से स्थापित निःशुल्क ''आर्य महिला संगीत एवं भजनोपदेशिका गुरुकुल'' है। कन्या गुरुकुल से संगीत शिक्षा प्राप्त करके अनेक विदुषियाँ स्वतन्त्र रूप से देश भर में वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार करके अपने जीवन को सफल कर रहीं हैं। उनको अच्छा आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो रहा है।

वैदिक धर्मशिक्षा प्रशिक्षण – पंचमहायज्ञ, वेदपाठ, वेद पारायण महायज्ञ, सत्यार्थ प्रकाश, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि का अध्यापन, सोलह संस्कार, वैदिक कर्मकाण्ड, पर्वपद्धति, पुरोहित आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। गुरुकुल से शिक्षा ग्रहण करके कन्याएँ देश के सभी महानगरों तथा प्रदेशों, ग्राम में वेद पारायण महायज्ञ, उपदेशक तथा कथावाचक के रूप में वेद कथाएं कर रही हैं।

वीरांगना प्रशिक्षण– सभी छात्राओं को निरन्तर योग, आसन–प्राणायाम सर्वांग सुन्दर व्यायाम, पी टी, सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार, जूडो–कराटे, डम्बल लेजियम, लाठी चलाना, तलवार चलाना, तीरंदाजी, दण्ड–बैठक, रस्सा–मलखम आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त करके अनेक छात्राएँ पतंजलि योगपीठ में योग शिक्षिका तथा महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षक के पद पर कार्य कर रही हैं।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण :– गुरुकुल में सभी छात्राओं को अनिवार्य कम्प्यूटर का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

सिलाई प्रशिक्षण :– गुरुकुल में सभी इच्छुक छात्राओं को अनिवार्य सिलाई का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। कन्या गुरुकुल आपके दान पर निर्भर है, अधिक से अधिक सहयोग की अपेक्षा है। गुरुकुल में दान धारा **'80 जी'** के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

कन्या गुरुकुल की सुयोग्य ब्रह्मचारिणियों तथा समस्त गुरुकुल परिवार की ओर से विनम्र नमन। धन्यवाद

आचार्या– प्रियंका आर्या
कन्या गुरुकुल, भुसावर, भरतपुर

प्रतिनिधि गतिविधि

दिनांक 16 जनवरी 2020 को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों का दल दिल्ली कीर्ति नगर स्थित एम. डी. एच. मुख्यालय में पहुँचा जहाँ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य के साथ पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी से मिलकर मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त किया, उनका कुशलक्षेय पूछने के बाद आर्य समाज के विषय में महाशय जी से विचार विमर्श हुआ, महाशय जी ने राजस्थान प्रान्त में प्रतिनिधि सभा द्वारा चलाये जा रहे प्रचार प्रसार एवं अन्य गतिविधियों की जानकारी विनय जी के माध्यम से प्राप्त की। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित किये जा रहे है पाक्षिक पत्र आर्य मार्तण्ड के स्वरुप सुधार पर महाशय जी एवं विनय जी ने अनेक सुझाव दिए इस पर सभा अधिकारियों ने मार्तण्ड को आर्य जगत् की प्रभावी पत्रिका बनाने का निर्णय लिया। प्रतिनिधि सभा के इस दल में सभा के उपप्रधान– श्री जगदीश प्रसाद आर्य, श्री आचार्य रवि शंकर आर्य, सभा मंत्री श्री देवेन्द्र शास्त्री, अन्तरंग सदस्य अशोक आर्य, कोटपूतली, भजनोपदेशक श्री दीपक शास्त्री एवं विनय झा आदि उपस्थित थे।

दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने राजस्थान में आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के विषय में चर्चा की इस पर महाशय जी ने दोनों हाथ उठाकर सम्मेलन हेतु सहयोग करने का आश्वासन दिया

दीपक शास्त्री
वैशाली नगर, जयपुर

51 कुण्डीय नव संवत्सरेष्टि विश्व शांति पर्यावरण संरक्षण महायज्ञ

चैत्र शुक्ल एकम् विक्रम संवत् 2077

बुधवार, दिनांक 25 मार्च 2020

स्थानः सामुदायिक केन्द्र, अरावली मार्ग, सेक्टर 8, मानसरोवर जयपुर
समय : सायं 4.00 बजे से 8.00 बजे तक

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामपाल विद्याभास्कर
मुख्य वक्ता : आचार्य सोमदेव आर्य
गुरुकुल मलारना चौड़, सवाईमाधोपुर

प्रकाशन सहयोगी– षाण्मासिक
1. कन्या गुरुकुल भुसावर, भरतपुर 2. यशमुनि पर्वतसर नागौर
आर्य प्रतिनिधि सभा प्रकाशन सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

आर्यवीर दल राजस्थान कर रहा है–आर्य समाज सशक्तिकरण का सपना साकार

आर्य वीर दल राजस्थान द्वारा चलाया जा रहा आर्य समाज सशक्तिकरण अभियान सफलता की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। वर्तमान में यह अभियान हिंडौन सिटी (जिला–करौली) में आर्यवीर दल राजस्थान के सहमंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अन्तरंग सदस्य– अंकुश आर्य के नेतृत्व में चलाया जा रहा है। साथ में शिक्षक हेमराज आर्य अपना पूरा समय संगठन की सेवा में लगा कर इस अभियान को सफल बनाने में निशदिन लगे हुए हैं। आर्य जनों को यह विदित होगा कि संपूर्ण आर्य जगत् में हिंडौन सिटी कस्बा अपना एक विशिष्ट पहचान रखता है। आर्य जगत् का प्रसिद्ध वैदिक साहित्य प्रकाशन श्री घूड़मल प्रहलाद कुमार प्रकाशन ट्रस्ट इसी कस्बे में स्थित है। जिसने इस कस्बे को संपूर्ण संसार के कोने–कोने में एक विशिष्ट पहचान दिलवाई है। प्रसिद्ध योग गुरु स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृण जी, स्वामी कर्मवीर जी महाराज का सामाजिक क्षेत्र की उन्नति के प्रथम काल में हिंडौन सिटी से विशेष जुड़ाव रहा है। इस कस्बे में दो आर्य समाजें स्थित हैं जिनकी बीच की दूरी लगभग 2 किलोमीटर है। पुराने समय में यह कस्बा पूरे भरतपुर संभाग का प्रचार केंद्र रहा है। आज भी यहाँ आर्य समाज से जुड़े तथा प्रतिदिन यज्ञ करने वाले परिवारों की काफी संख्या है। किंतु आर्य समाज की विचारधारा का यह संस्कार पुरानी पीढ़ी तक ही सीमित रह गया है, नई पीढ़ियां इससे नहीं जुड़ पाई हैं। जिससे आर्य समाज के कार्यक्रमों से नौजवान पीढ़ी नदारद दिखाई देती है। शहर के दोनों आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संग में महिला उपस्थिति शून्य हो गई थी। पुरुष भी लगभग पाँच–सात की संख्या में आकर यज्ञ कार्य संपन्न कर जाते थे। इन सभी परिस्थितियों को समझकर आर्यवीर दल के प्रचारकों ने कमर कसी और हिंडौन में आर्य समाज सशक्तिकरण के लिए धुआंधार प्रचार व संपर्क कार्य प्रारंभ किया। इसके अंतर्गत आर्यवीर दल की बाल शाखा का नियमित संचालन प्रारंभ किया। जिसमें बच्चों का खेल, व्यायाम, बौद्धिक व रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जीवन निर्माण का कार्य किया जा रहा है। ये सभी बच्चे आर्य समाज के रविवारीय सत्संग में बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। हमारे प्रचारक परिवारों में भोजन व्यवस्था के माध्यम से घर के सदस्यों के साथ सत्संग–चर्चा करते हैं। प्रचारक अपने मधुर व्यवहार द्वारा परिवार के प्रत्येक सदस्य को आर्य समाज की गतिविधियों से जोड़ने का विशेष प्रयास करते हैं। यह कार्यक्रम हमारे कार्य की सफलता का विशेष कारण बन रहा है। आर्य समाज सशक्तिकरण कार्यक्रम की सफलता के इसी क्रम में रविवारीय सत्संग प्रारंभ किया गया। जिसमें परिवारों के सभी सदस्यों (स्त्री, पुरुष व बच्चों) ने सत्संग में उपस्थिति देना प्रारंभ किया है। कुछ महिलाओं का अपने कार्यों की व्यस्तता के चलते रविवारीय प्रातःकालीन सत्संग में आना कठिन होता है। इस समस्या के निराकरण के लिए दोनों आर्य समाजों में प्रत्येक सप्ताह के अलग–अलग दिवसों पर (बुधवार व शुक्रवार) सायंकालीन महिला यज्ञ–सत्संग का कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया है। जिसमें महिलाओं की भारी उपस्थिति हमारे अभियान को बल प्रदान कर रही है। महिला सत्संग में प्रथम बार उपस्थित नए सदस्य को मुख्य यजमान के रूप में आमंत्रित किया जाता है तथा यज्ञ में सभी महिला कार्यकर्ता बड़े प्रेम व सहयोग के साथ यज्ञ–प्रशिक्षण का कार्य संपन्न करवाती हैं तथा नई सदस्या को साहित्य आदि भेंट कर संगठन से जुड़ने के लिए उत्साहित किया जाता है। अब महिला कार्यकर्ताओं ने भी समूह बनाकर अपनी कॉलोनी के घरों पर संपर्क अभियान प्रारंभ कर दिया है। प्रातःकाल आर्य समाज में योग–व्यायाम की कक्षाएं भी शिक्षकों द्वारा संचालित की जा रही हैं। आगामी कार्यक्रमों में विद्यालयों में जाकर आदर्श युवा निर्माण अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत जनजागृति अभियान चलाया जाएगा तथा साथ ही विद्यालयों में वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। व्यवसाय से जुड़े व्यस्त युवाओं को संगठन से जोड़ने के अभियान की जानकारी आगामी अंकों में दी जाएगी।

गगेन्द्र आर्य
महामंत्री, आर्यवीर दल, राजस्थान

आवश्यक सूचना एवं निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा ने राजस्थान प्रान्त में स्थित समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा प्रचार–प्रसार हेतु भजनोपदेशक की व्यवस्था की है। ब्र० ध्रुव शास्त्री जो गुरुकुल झज्जर से स्नातक हैं, युवा एवं योग्य गायक हैं। इस सम्बन्ध में आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज के वार्षिकोत्सव, यज्ञ अथवा अन्य कार्यक्रम हेतु आमन्त्रित करने के लिए राजापार्क जयपुर स्थित सभा कार्यालय से सम्पर्क कर अपना कार्यक्रम निश्चित करें। प्रत्येक आर्य समाज अपने वार्षिकोत्सव एवं प्रचार–प्रसार गतिविधियों हेतु सभा से अग्रिम स्वीकृति प्राप्त कर लेवें।

सम्पर्क :– 0141–2621879, 8423149577

मंत्री

मार्च प्रथम अंक से आचार्य सोमदेव जी आर्य द्वारा जिज्ञासा–समाधान

मनुष्य में जिज्ञासा का होना बहुत स्वाभाविक है यदि उसे समय पर उचित समाधान मिलता रहे तो व्यक्ति नवीन–नवीन ज्ञान के साथ उन्नति के पथ पर उत्साहित होकर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत जिज्ञासाओं का समाधान न करने पर अथवा योग्य व्यक्तियों के अभाव में उचित समाधान न होने पर जीवन में रुकावट बनी रहती है, व्यक्ति कुण्ठित हो जाता है इस प्रकार उसकी उन्नति का रथ रुक जाता है। आर्यजनों की भी शास्त्रीय, सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक, व्यवहारिक शंकाओ का प्रमाण एवं तर्कपूर्वक समाधान होता रहे, इसके लिए सुप्रसिद्ध दर्शनाचार्य आचार्य सोमदेव जी आर्य (मलारना चौड़, सवाई माधोपुर) ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की है। इस हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आचार्य जी का धन्यवाद ज्ञापित करती है। आचार्य जी द्वारा जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान आर्य मार्तण्ड के आगामी अंको में प्रकाशित किया जायेगा। अतः आप प्रबुद्ध पाठक अपनी शंकाओं को आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय अथवा ईमेल पर भेज सकते हैं।

मंत्री

आर्य मार्तण्ड के सम्बन्ध में घोषणा

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

संपादक	–	देवेन्द्र कुमार	**मुद्रक**	–	वी. के. प्रिन्टर्स
नागरिकता	–	भारतीय	**पता**	–	सुदर्शनपुरा, जयपुर
पता	–	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क, जयपुर, राजस्थान			
प्रकाशक	–	देवेन्द्र कुमार	**प्रकाशन अवधि**	–	पाक्षिक
नागरिकता	–	भारतीय			
पता	–	मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर			

मैं, देवेन्द्र कुमार एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

प्रकाशकः देवेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द जयन्ती सम्पन्न

वेदोद्धारक जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जयंती आर्य समाज मानसरोवर रजत पथ जयपुर में बड़ी धूमधाम हर्ष और उल्लास के साथ मनाई गयी । ऋषि जयंती के उपलक्ष्य में प्रतिनिधि सभा जयपुर की ओर से आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में यज्ञ भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया । देवयज्ञ वैशाली नगर आर्य समाज के युवा पुरोहित श्री दीपक शास्त्री ने सम्पन्न कराया। सुमधुर भजनो की विस्तृत श्रृंखला में ऋषि भक्ति के भजन आर्य समाज मानसरोवर के कार्यकारी प्रधान श्री सुनील जी अरोडा, श्रीमती प्रभा त्रिपाठी, पंडित श्री यादराम जी आर्य आदि ने प्रस्तुत किये । प्रतिनिधि सभा के युवा भजनोपदेशक श्री ध्रुव शास्त्री ने अपने मधुर और ओजस्वी कंठ से सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया। ऋषि महिमा के भजनो से पूरा सत्संग भवन उत्साह हर्ष और उल्लास से भर गया, ऐसा मनोरम तेजोमय वातावरण देखते ही बनता था। पंडित रविदत्त जी ने काव्य पाठ कर ऋषि को विशेष नमन् किया ।

मंच का संचालन कुशलता से करते हुए श्री संदीपन आर्य ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री देवेंद्र शास्त्री ने अपनी बात प्रस्तुत करते हुए सभा के आगामी वर्षभर के कार्यक्रमों की रुपरेखा प्रस्तुत की । आर्यों को भवनों से बाहर निकलकर समाज सेवा की यथार्थ आवश्यकता को सभी के सम्मुख रखा ।

ऋषि दशमी पर आयोजित इस विशेष कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्ति जैसे श्री एम एल गोयल पूर्व निदेशक DAV , पंडित कृष्णपाल सिंह , श्री सुभाष गुप्ता, श्री सतीश जी मित्तल, श्री कृष्ण दत्त आर्य, श्री ईश्वर दयाल माथुर आदि की उपस्थिति शोभनीय रही । अंत में श्री अवनीश आर्य ने बहुत की कम शब्दों में ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज से जुड़ने और स्वाध्याय को जीवन में अपनाने पर बल दिया ।

आर्य समाज मानसरोवर के प्रधान श्री अर्जुन देव कालरा ने प्रतिनिधि सभा के सभी अधिकारियों का तथा उपस्थित सभी महानुभावो का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हुए देश भर की आर्य समाजो में युवा वर्ग को आगे लेकर ऋषि का सन्देश जन जन तक पहुंचने की आवश्यकता पर बल दिया ।

अवनीश आर्य

शोक समाचार

1. आर्य जगत् के विख्यात विद्वान्, अनेक ग्रंथों के लेखक, संपादक व प्रकाशक, वैदिक धर्म के लिए जीवन समर्पित करने वाले आचार्य ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी का दिनांक 17–2–2020 को सायंकाल चिकित्सा के दौरान देहावसान हुआ है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान आचार्य जी के निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

2. आर्य समाज चांपानेरी के संस्थापक, सरल स्वभाव, सेवा भावी, आर्य समाज चांपानेरी के पूर्व मंत्री श्री रामेश्वर प्रसाद जी आर्य के निधन (12 फरवरी 2020) पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

3. आर्य समाज ब्यावर के वरिष्ठ सदस्य श्री बृजराज जी आर्य का देहांत दिनाँक 18 फरवरी 2020 को हो गया । श्री बृजराज जी आर्य लगभग 108 वर्ष के थे आप हमेशा से ही आर्य समाज से जुड़े हुए रहे। उन्होंने एक सामाजिक कार्यकर्ता ओर सेवाभावी समाजसेवी के रूप में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई । उनके निधन से आर्य समाज ब्यावर ने एक अनमोल रत्न खो दिया । उनके निधन से आर्य जगत को अपूरणीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति करना संभव नही है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ऐसी पुण्य आत्मा के लिए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है ।

आर्यवीर दल राजस्थान की प्रान्तीय कार्यकारिणी

1.	श्री भवदेव शास्त्री, टाटोंटी, अजमेर	संचालक	9001434484
2.	आचार्य रवि शंकर आर्य, बयाना, भरतपुर	सहसंचालक	6375441774
3.	श्री गगेन्द्र शास्त्री, जैसलमेर	मंत्री	7425070732
4.	श्री अंकुश आर्य, गंगापुर सिटी	उपमंत्री	9887889707
5.	श्री गोविन्द प्रसाद आर्य, गंगापुर सिटी	कोषाध्यक्ष	8952089014
6.	श्री यतीन्द्र शास्त्री, अजमेर	प्रचारमंत्री	9414436031
7.	श्री रामनारायण शास्त्री, जोधपुर	बौध्दिकाध्यक्ष	9413610928
8.	श्री भागचन्द आर्य, चांपानेरी, अजमेर	प्रधान शिक्षक	9929353838
9.	श्री सुभाष शास्त्री, बीकानेर	सदस्य	9414416410
10.	श्री सतीश आर्य, खेरथल, अलवर	सदस्य	9413282980
11.	श्री रमेशचन्द गोस्वामी, कोटा	सदस्य	9461182706
12.	श्री नरेन्द्र आर्य, गंगापुर सिटी	सदस्य	
13.	श्री डॉ.सुधीर शर्मा, जयपुर	सदस्य	9314032161
14.	श्री रणजीत, चिडावा, चूरु	सदस्य	9414883966
15.	श्री राजुराम आर्य, घडसाना, श्रीगंगानगर	सदस्य	9672997965
16.	श्री अभिषेक आर्य, गंगापुर सिटी	सदस्य	7014517154
17.	श्री विश्वास पारीक, अजमेर	सदस्य	9460016590
18.	श्री पी. सी. मित्तल, कोटा	सदस्य	9413349836
19.	श्री देवेन्द्र शास्त्री, जयपुर	सदस्य	9352547258
20.	श्री अमित आर्य, बीकानेर	सदस्य	9929946469

भवदेव शास्त्री

प्रान्तीय संचालक आर्य वीर दल राजस्थान

आगामी कार्यक्रम

1. 23 फरवरी 39वां वार्षिकोत्सव, आर्य समाज, विज्ञान नगर, कोटा
2. 2 से 4 मार्च चतुर्वेद शतकम् पारायण महायज्ञ, आर्य समाज, कुचामण नागौर
3. 5 से 8 मार्च यज्ञ एवं वेदकथा, आर्य समाज, पटेल नगर, पवनपुरी, बीकानेर
4. 25 मार्च मानसरोवर में 51 कुण्डीय यज्ञ चैत्र शुक्ल एकम पर नव संवत्सर के
5. 12 से 19 अप्रेल क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात
6. 12 से 17 मई युवती व्यक्तित्व विकास शिविर, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात
7. 17 से 24 मई किशोर चरित्र निर्माण शिविर, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़, गुजरात

प्रतिनिधि गतिविधि

संसद में स्वामी सुमेधानन्द जी के साथ

आर्य समाज छबड़ा, बारां में निर्माणाधीन भवन का अवलोकन

श्री रमेश आर्य (अमेरिका) एवं श्री वेदप्रकाश आर्य के साथ कोटा में

व्यक्तित्व विकास शिविर के अवसर पर कोटा में

गुरुकुल में संगीत शिक्षा का प्रशिक्षण

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 आर. एन. आई नं.10471/60

एम डी एच के 100 साल, बेमिसाल !

आपका प्यार, आपका विश्वास, एमडीएच ने रचा इतिहास

1919·CELEBRATING·2019

1919. शताब्दी उत्सव .2019

Years of affinity till infinity

आत्मीयता अनन्त तक

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित

MDH मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न
पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिनांक 16 मार्च, 2019 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में महाशय जी को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा पद्म भूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।

The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार 5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये अपने व्यवसाय को समर्पित किया है। अधिक जानने के लिये YouTube Channel पर Mahashay Dharampal Gulati टाईप करें और देखें।

प्रेषक:-
सम्पादक,
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास , राजा पार्क,
जयपुर-302004

प्रेषित

टिकट